Shri Chidambareshadashashloki Stutih

श्रीचिदम्बरेशदशश्लोकी स्तुतिः

Document Information

Text title : Shri Chidambareshadashashloki Stutih

File name : chidambareshadashashlokIstutiH.itx

Category : shiva, dashaka, stuti

Location : doc_shiva

Proofread by : Aruna Narayanan

Description/comments : From shrInaTarAjastavamanjarI

Latest update : July 10, 2022

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

July 10, 2022

sanskritdocuments.org

श्रीचिदम्बरेशदशश्लोकी स्तुतिः

उपमन्युमहर्षिप्रणीता
कृपासमुद्रं सुमुखं त्रिनेत्रं जटाधरं पार्वतिवामभागम् ।
सदाशिवं रुद्रमनन्तरूपं चिदम्बरेशं हृदि भावयामि ॥ १॥

कल्याणमूर्तिं कनकाद्रिचापं कान्तासमाक्रान्तनिजार्धदेहम् ।
कालान्तकं कामरिपुं पुरारिं चिदम्बरेशं हृदि भावयामि ॥ २॥

विशालनेत्रं परिपूर्णगात्रं गौरीकलत्रं दनुजारिबाणम् ।
कुबेरमित्रं सुरसिन्धुशीर्षं चिदम्बरेशं हृदि भावयामि ॥ ३॥

वेदान्तवेद्यं भुवनैकवन्द्यं मायाविहीनं करुणार्द्रचित्तम् ।
ज्ञानप्रदं ज्ञानिनिषेविताङ्घ्रिं चिदम्बरेशं हृदि भावयामि ॥ ४॥

दिगम्बरं शासितदक्षयज्ञं त्रयीमयं पार्थवरप्रदं तम् ।
सदादयं वह्निरवीन्दुनेत्रं चिदम्बरेशं हृदि भावयामि ॥ ५॥

विश्वाधिकं विष्णुमुखैरुपास्यं त्रिकोणगं चन्द्रकलावतंसम् ।
उमापतिं पापहरं प्रशान्तं चिदम्बरेशं हृदि भावयामि ॥ ६॥

कर्पूरगात्रं कमनीयनेत्रं कंसारिवन्द्यं कनकाभिरामम् ।
कृशानुढक्काधरमप्रमेयं चिदम्बरेशं हृदि भावयामि ॥ ७॥

कैलासवासं जगतामधीशं जलन्धरारिं पुरुहूतपूज्यम् ।
महानुभावं महिमाभिरामं चिदम्बरेशं हृदि भावयामि ॥ ८॥

जन्मान्तरारूढमहाघपङ्किलप्रक्षालनोद्भूतविवेकतश्च यम् ।
पश्यन्ति धीराः स्वयमात्मभावात् चिदम्बरेशं हृदि भावयामि ॥ ९॥

अनन्तमद्वैतमजस्रभासुरं ह्यतर्क्यमानन्दरसं परात्परम् ।
यज्ञाधिदैवं यमिनां वरेण्यं चिदम्बरेशं हृदि भावयामि ॥ १०॥

वैयाघ्रपादेन महर्षिणा कृतां चिदम्बरेशस्तुतिमादरेण ।

पठन्ति ये नित्यमुमासखस्य प्रसादतो यान्ति निरामयं पदम् ॥ ११॥

इति उपमन्युमहर्षिप्रणीता श्रीचिदम्बरेशदशश्लोकी स्तुतिः समाप्ता ।

(This is similar to existing chidambareshastutiH but this has 10 verses with variations, so kept separate)

Proofread by Aruna Narayanan

Shri Chidambareshadashashloki Stutih

pdf was typeset on July 10, 2022

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*